पंजीयन क्रमांक 04/14/08825/06

ISSN-0975-2560

पारमिता

(वर्ष 7, अंक 7)

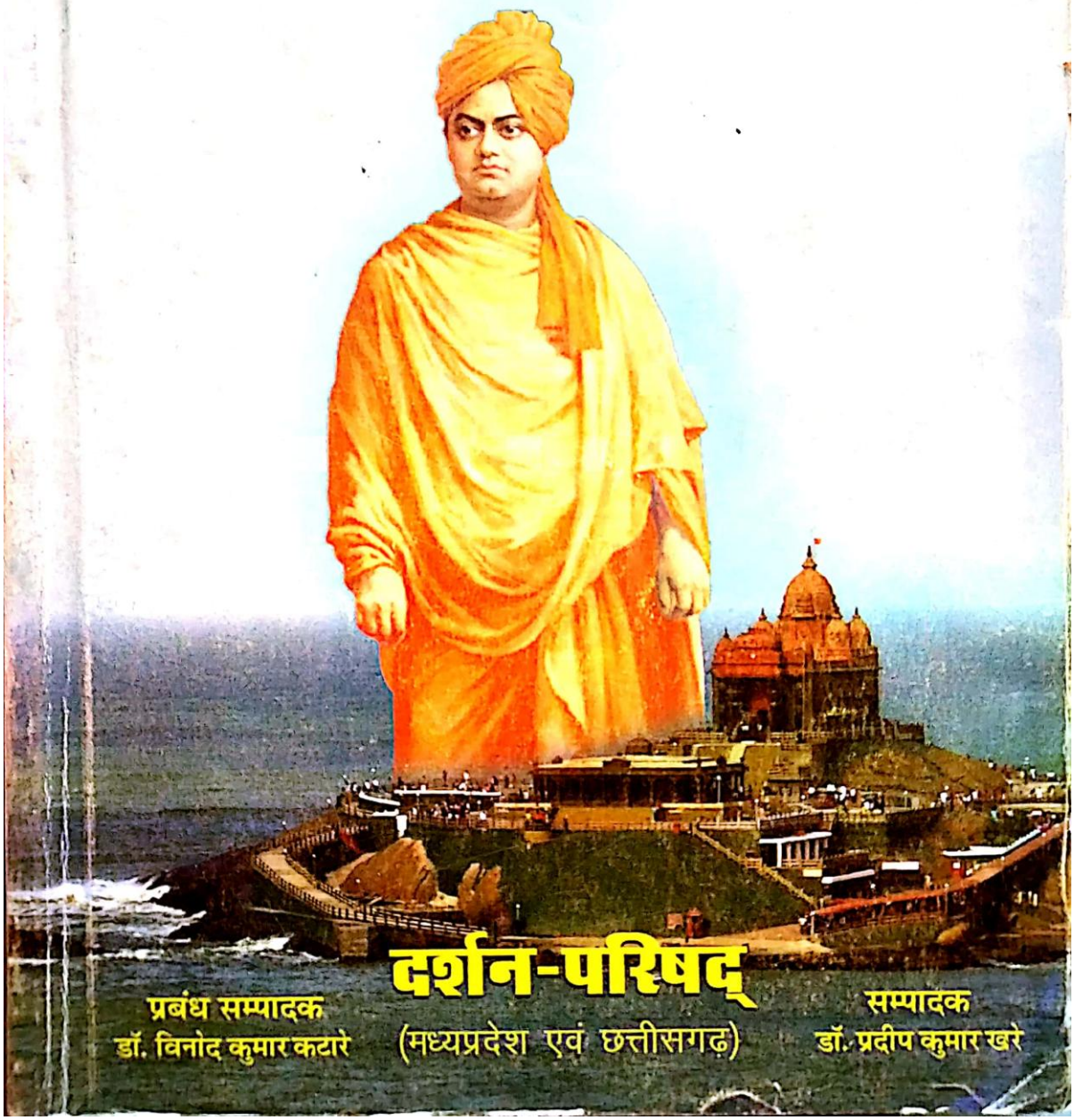

दर्शन-परिषद्

(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)

प्रबंध सम्पादक
डॉ. विनोद कुमार कटारे

सम्पादक
डॉ. प्रदीप कुमार खरे

पर्यावरणीय समस्या और बौद्ध दर्शन

डॉ. नरेन्द्र कुमार बौद्ध
दर्शन विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

वर्तमान में जहाँ एक ओर मनुष्य इस संघर्षशील युग में भौतिक सुख–सुविधाओं से अपने को सुसज्जित पा रहा है अथवा पाने का प्रयास कर रहा है, तो दूसरी ओर अनेक व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्यायें उसके विकास में बाधक बनी हुई हैं। आज जीवन के मूल्यों में गिरावट अनुभव की जा रही है तो स्वयं उसके आस्था एवं विश्वास जो उसके जीवन के आधार हैं, उन पर उसे भरोसा नहीं है। धार्मिक भेद–भाव, अलगाववाद एवं अप–संस्कृति जैसे संकट तो आज के मानव के समक्ष यक्ष–प्रश्न बनकर खड़े ही हैं। परन्तु इन सबसे इतर एक अन्य गंभीर समस्या जो एकदेशीय नहीं है जिसकी आज अनदेखी नहीं की जा सकती, वह है सार्वभौमिक पर्यावरणीय समस्या जो मानव–अस्तित्व के लिए अत्यंत गंभीर है। यह समस्या संपूर्ण समाज चाहे वह मनुष्य हो या अन्य प्राणी, पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डाल रही है।

अथक वैज्ञानिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रयासों के बावजूद निकट भविष्य में इस समस्या का कोई समाधान प्रतीत नहीं हो रहा है। ऐसी स्थिति में तब क्या विकासधारा को रोक दिया जाए? और यदि नहीं तो विकास की दशा क्या होनी चाहिए? यदि हम प्रकृति को उसकी आंतरिक मूल्यवत्ता के कारण उपभोग्य न मानें, इसका पूर्ण सम्मान और संरक्षण ही करें तो फिर मानव का भौतिकीय पालन–पोषण कैसे संभव है? यहीं सोपानपरक मूल्य की बात प्रासंगिक हो जाती है कि प्राकृतिक आंतरिक सामंजस्य को किसी तरह बिगाड़े बिना हम उतना ही उचित उपयोग करें जिससे पूरी समष्टि का संतुलन कायम रह सके। विगत् दो–तीन दशकों से इस समस्या का गंभीरता से अध्ययन–अध्यापन हो रहा है तो वहीं इस संदर्भ में बौद्ध दर्शन के इस समस्या पर क्या प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विचार हैं इसका विश्लेषण इस शोध–पत्र का विषय है। बौद्ध दर्शन मानव जीवन और उससे संबंधित विभिन्न क्षेत्र के पर्यावरणीय वस्तुओं के संबंधों का ज्ञान मानवहित को ध्यान में रखकर बौद्धिक दृष्टिकोण रखते हुए सम्यक् मूल्यांकन करता है। अतः जीवन धारण करने योग्य विकास अर्थात् एक ऐसा विकास जो मानव जीवन की उत्तमता को एवं पर्यावरण को बिना हानि पहुँचाए, अपनाना चाहिए जो वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए किया जाए।

पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति 'परि समन्तात् आवरण' से हुई है जिसका अर्थ सब तरफ से सृष्टि को व्याप्त